३. राजनीतिक दल

पिछले प्रकरण में हमने संविधान की प्रगति और चुनावी प्रक्रिया के प्रारूप का अध्ययन किया । आम जनता, लोकतंत्र, प्रतिनिधित्व और चुनाव इन सबको जोड़ने का महत्त्वपूर्ण कार्य राजनीतिक दल करते हैं । हम राजनीति के बारे में जो सुनते और पढ़ते हैं, वह प्रायः राजनीतिक दलों से संबंधित होता है । राजनीतिक दलों का अस्तित्व सभी लोकतांत्रिक व्यवस्था में होता है अपितु लोकतंत्र के कारण ही राजनीतिक दलों में सत्ता पाने के लिए होड़ लगी रहती है । प्रस्तुत पाठ में हम भारतीय राजनीतिक दल और उनकी पद्धति का परिचय प्राप्त करेंगे ।

आपके विद्यालय और क्षेत्र में आपने कई गुट, संस्था अथवा संगठनों को किसी कार्य को पूरा करने के लिए प्रयत्न करते हुए देखा होगा । सार्वजनिक प्रश्नों को हल करने के लिए कोई संगठन अग्रसर रहता है। विभिन्न आंदोलनों के बारे में भी आप पढ़ते हैं । इसका अर्थ यह है कि समाज में जिस प्रकार विभिन्न गुट, संस्था, आंदोलन सक्रिय रहते हैं: उसी प्रकार राजनीतिक दल चुनाव लड़ने के लिए अग्रसर दिखाई देते हैं । समाज में कार्य करने वाली संस्थाओं, संगठनों और राजनीतिक दलों में अंतर होता है । राजनीतिक दल भी सामाजिक संगठन ही होते हैं परंतु उनके उद्देश्य और कार्य पद्धति कुछ भिन्न होती है । इसके आधार पर हम यह कह सकते हैं कि राजनीतिक सत्ता पाने के लिए जब लोग इकट्ठे आकर चुनावी प्रक्रिया में सहभागी होते हैं, तब उन संगठनों को हम 'राजनीतिक दल' कहते हैं । चुनाव में सहभागी होकर, उसमें विजय पाकर सत्ता प्राप्त करके अपने दल की सरकार बनाने वाले लोगों का गुट 'राजनीतिक दल' कहलाता है ।

राजनीतिक दलों की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्न प्रकार से बता सकते हैं ।

सत्ता प्राप्त करना : राजनीतिक दलों का मुख्य उद्देश्य चुनावों के माध्यम से मात्र सत्ता प्राप्त करना ही होता है । इस कारण सत्ता पाने के लिए विभिन्न राजनीतिक दल एक-दूसरे से होड़ लेते हैं । ऐसी स्पर्धा करना कुछ अनुचित नहीं है परंतु स्पर्धा का स्वरूप स्वस्थ होना चाहिए ।

विचारधारा का आधार : प्रत्येक राजनीतिक दल विशिष्ट नीतियों और विचारों का समर्थक होता है । सार्वजनिक हितों के प्रश्नों के बारे में उनकी एक विशेष भूमिका होती है । इन सब के समावेश से दल की विचारधारा बनती है । यह विचारधारा जिन लोगों को सही लगती है, वे लोग उस राजनीतिक दल का समर्थन करते हैं । दल को लोगों का जो समर्थन मिलता है, उसे उस दल का 'जनाधार' कहा जाता है । वर्तमान समय में सभी राजनीतिक दलों की विचारधारा एक समान लगती है; जिसके कारण विचारधारा के आधार पर राजनीतिक दलों में अंतर करना कठिन हो गया है ।

दलीय कार्यक्रम : अपनी विचारधारा को प्रत्यक्ष में लाने के लिए राजनीतिक दल उसपर आधारित कार्यक्रमों को निर्धारित करते हैं । सत्ता प्राप्त होने पर इन कार्यक्रमों को कार्यान्वित किया जाता है । सत्ता न मिलने पर भी ये राजनीतिक दल कार्यक्रमों के आधार पर लोगों का समर्थन जुटाने की कोशिश करते हैं ।

सरकार स्थापित करना : राजनीतिक दल सरकार बनाकर देश का राजकाज चलाते हैं अर्थात यह कार्य वह दल करता है; जिस राजनीतिक दल को चुनाव में बहुमत मिलता है । जिन दलों को बहुमत नहीं मिलता, वे दल विरोधी दल के रूप में कार्य करते हैं ।

सरकार और जनता के बीच की कड़ी :

राजनीतिक दल सरकार और जनता के बीच सेतु या कड़ी के रूप में कार्य करते हैं । राजनीतिक दल लोगों की माँगों और शिकायतों को सरकार तक पहुँचाने का कार्य करते हैं तथा सरकार विभिन्न दलों द्‌वारा अपनी नीतियों-कार्यक्रमों के लिए समर्थन प्राप्त करने की कोशिश करती है ।

समाचारपत्र के इन समाचारों से आपको क्या आकलन हुआ; यह संक्षेप में बताइए ।

- सत्ता पक्ष के विरोध में सभी विरोधी राजनीतिक दलों की सभा मुंबई में हुई । किसानों की समस्याएँ उठाएँगे !
- सत्ताधारी दल ने ग्रामीण क्षेत्रों में संवाद यात्राओं का आयोजन किया ।

मान लें, आप विरोधी दल के नेता हैं और आपके दल के ध्यान में यह आया कि स्वास्थ्य क्षेत्र में सरकार अच्छा कार्य नहीं कर रही है । विरोधी दल के नेता के रूप में आप क्या करेंगे ?

सोचिए और लिखिए ।

महात्मा गांधी, विनोबा भावे और जयप्रकाश नारायण ने 'दलरहित' लोकतंत्र की कल्पना प्रस्तुत की थी । वर्तमान समय में ऐसा लोकतंत्र लाने के लिए क्या करना होगा ?

भारत में दल पद्‌धति का बदलता स्वरूप

(१) स्वातंत्र्योत्तर काल में काँग्रेस ही एक सशक्त दल था । कुछ अपवादों को छोड़कर केंद्र और राज्य स्तर पर इसी दल का बहुमत था । भारतीय राजनीति पर इस दल की अच्छी पकड़ थी । इसलिए इस समय में दल पद्‌धति का वर्णन 'एक प्रबल दल पद्‌धति' के रूप में किया जाता है ।

(२) एक प्रबल दल पद्‌धति को १९७७ ई. में चुनौती दी गई । यह चुनौती काँग्रेसेतर दलों ने इकट्‌ठे आकर दी थी ।

(३) १९८९ ई. में हुए लोकसभा चुनाव के बाद राजनीति में किसी एक दल का प्राबल्य होना समाप्त हुआ । तत्पश्चात के समय में कई राजनीतिक दलों ने मिलकर गठबंधन की सरकार बनाने की शुरूआत की । गठबंधन की सरकार बनाने का प्रयोग भारतीय जनता पार्टी और काँग्रेस दोनों दलों ने किया । गठबंधन की सरकार होने से अस्थिरता निर्माण होती है, इस मान्यता को हमारे देश की दल पद्‌धति ने भ्रामक सिद्‌ध किया । गठबंधन की सरकार अब भारतीय राजव्यवस्था में एक आम बात बन गई है ।

क्या, आप जानते हैं ?

- एक ही राजनीतिक दल के हाथ में दीर्घ समय तक सत्ता हो और अन्य राजनीतिक दल प्रभावी न हो, तो उस दल पद्‌धति को 'एक दलीय पद्‌धति' कहा जाता है ।
- राजनीति में दो राजनीतिक दल प्रभावशाली रहें और इन्हीं दो राजनीतिक दलों के हाथों में वैकल्पिक रूप में सत्ता रहे । तब उस शासन पद्‌धति को 'द्‌विदलीय पद्‌धति' कहा जाता है ।
- कई राजनीतिक दल सत्ता की होड़ में होते हैं और उन सभी दलों का कम-अधिक मात्रा में राजनीतिक प्रभाव रहता है । इस पद्‌धति को 'बहुदलीय पद्‌धति' कहा जाता है ।

करके देखें-

यहाँ राजनीतिक दलों के दो प्रमुख गठबंधन दिए हैं । उनमें घटक दलों को खोजिए और उनके नाम लिखिए ।

(१) राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA)

(२) संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (UPA)

यह भी समझ लें –

राष्ट्रीय दल और प्रांतीय दल किसे कहा जाता है ?

राष्ट्रीय दल के रूप में मान्यता प्राप्त करने के लिए निर्वाचन आयोग द्‌वारा निर्देशित निम्न निकषों की पूर्ति करना आवश्यक है ।

(अ) चार अथवा उससे अधिक राज्यों में लोकसभा अथवा विधानसभा के पिछले चुनाव में कम-से-कम ६% वैध वोट मिलना आवश्यक है । साथ ही, पिछले चुनाव में किसी भी राज्य या राज्यों से लोकसभा में न्यूनतम चार प्रतिनिधि चुनकर आने चाहिए ।

अथवा

(ब) लोकसभा के कुल निर्वाचन क्षेत्र के कम-से-कम २% निर्वाचन क्षेत्रों से; तथा कम-से-कम तीन राज्यों से प्रत्याशियों का चुनाव जीतना आवश्यक है ।

प्रांतीय दल के रूप में मान्यता पाने के लिए निर्वाचन आयोग द्‌वारा निर्धारित निम्न निकषों की पूर्ति करना आवश्यक है ।

(अ) लोकसभा अथवा विधानसभा के पिछले चुनाव में कम-से-कम ६% वोट पाना या कम-से-कम दो प्रतिनिधियों का विधानसभा में चुनकर आना आवश्यक है ।

अथवा

(ब) विधानसभा की कुल सदस्य संख्या के कम-से-कम ३% स्थान अथवा कम-से-कम ३ स्थान प्राप्त करना आवश्यक है ।

भारत के कुछ प्रमुख राजनीतिक दलों का हम परिचय प्राप्त करेंगे ।

राष्ट्रीय दल

(संदर्भ : Election Commission of India, Notification No. 56/201/PPS-111, dated 13 December 2016)

(१) भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस : १८८५ ई. में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना हुई । स्थापना के समय काँग्रेस एक सर्वसमावेशक राष्ट्रीय स्वतंत्रता

के लिए प्रयत्न करनेवाला आंदोलन था । इसलिए उसमें विभिन्न विचारधारा के गुट शामिल हुए थे । स्वातंत्र्योत्तर समय में काँग्रेस का एक सबसे प्रभावी दल के रूप में उदय हुआ । पंथनिरपेक्षता, सर्वांगीण विकास, दुर्बल और अल्पसंख्यक वर्ग के लिए 'समान अधिकार, व्यापक समाजकल्याण' इस दल की पहले से ही नीति रही है। इस नीति के अनुसार इस दल द्‌वारा कई कार्यक्रमों को भी चलाया गया । इस दल का लोकतांत्रिक समाजवाद, अंतर्राष्ट्रीय शांति और सामाजिक समता पर विश्वास रहा है ।

(२) भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी : मार्क्सवादी विचारधारा पर आधारित इस पार्टी की स्थापना १९२५ ई.में हुई । भारत में यह बहुत पुरानी राजनीतिक पार्टी है । यह पार्टी श्रमिकों,

परिश्रमी वर्ग और श्रमिकों के हित के लिए कार्य करती है । इस पार्टी ने हमेशा पूँजीवाद का विरोध किया है ।

१९६० ई. के दशक में दो साम्यवादी देशों – चीन और सोवियत यूनियन में से किसका नेतृत्व स्वीकार करें, इसपर पार्टी के नेताओं में वैचारिक मतभिन्नता उत्पन्न हुई । परिणामतः भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी में दो फाड़ हुई और १९६४ ई. में भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) की स्थापना हुई ।

(३) भारतीय जनता पार्टी : भारतीय जनता पार्टी राष्ट्रीय स्तर पर एक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक पार्टी है ।

१९५१ ई. में भारतीय जनसंघ की स्थापना हुई । १९७७ ई. में स्थापित जनता पार्टी में भारतीय जनसंघ का विलय हुआ । जनता पार्टी का यह गठित स्वरूप अधिक समय टिका नहीं । पार्टी विभाजित हुई और १९८० ई. में भारतीय जनसंघ ने भारतीय जनता पार्टी की स्थापना की । प्राचीन भारतीय संस्कृति और परंपराओं का संवर्धन करना; इस पार्टी की भूमिका रही है । वित्तीय सुधारों पर भी पार्टी का बल रहा है ।

(४) भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) : यह पार्टी समाजवाद, पंथनिरपेक्षता और लोकतंत्र का समर्थन करती है । इस पार्टी का साम्राज्यवाद को हमेशा विरोध रहा है । श्रमिकों, किसानों, खेतिहरों के हितों की रक्षा करना, इस पार्टी की प्रमुख नीति रही है ।

(५) बहुजन समाज पार्टी : बहुजन समाज पार्टी समाजवादी विचारधारा पर आधारित राजनीतिक पार्टी है। बहुजनों के हितों की रक्षा करना इस पार्टी का प्रमुख उद्देश्य रहा है । १९८४ ई. में इस पार्टी की स्थापना हुई । 'बहुजन' शब्द में दलित, आदिवासी, अन्य पिछड़ा वर्ग और अल्पसंख्यकों का समावेश होता है। अतः बहुजन समाज को सत्ता में लाना इस पार्टी का प्रमुख उद्देश्य रहा है ।

(६) राष्ट्रवादी काँग्रेस पार्टी : १९९९ ई. में काँग्रेस से अलग होकर राष्ट्रवादी काँग्रेस पार्टी की

स्थापना हुई । लोकतंत्र, समता, पंथनिरपेक्षता आदि मूल्यों पर पार्टी का विश्वास रहा है । १९९९ ई. से लेकर २०१४ ई. तक काँग्रेस पार्टी के साथ गठबंधन करके यह पार्टी महाराष्ट्र में सत्ता में रही तथा केंद्र में भी २००४ ई. से २०१४ ई. इस दीर्घावधि में यह पार्टी काँग्रेस के नेतृत्व में बने गठबंधन का एक प्रमुख घटक दल रही ।

(७) तृणमूल काँग्रेस : १९९८ ई. में ऑल इंडिया तृणमूल काँग्रेस पार्टी की स्थापना हुई । २०१६ ई. में निर्वाचन आयोग द्वारा इस पार्टी को राष्ट्रीय पार्टी के रूप में मान्यता दी गई । लोकतंत्र, पंथनिरपेक्षता और दुर्बल वर्ग के हितों का संरक्षण करना इस पार्टी की प्रमुख नीति रही है ।

लोकसभा चुनाव २००९ ई. और २०१४ ई. में राष्ट्रीय दलों को मिले स्थान

राजनीतिक पार्टी का नाम	प्राप्त स्थान	
	२००९	२०१४
भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस	२०६	४४
भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी	४	१
भारतीय जनता पार्टी	११६	२८२
भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी)	१६	९
बहुजन समाज पार्टी	२१	–
राष्ट्रवादी काँग्रेस पार्टी	९	६

आपने समाचारपत्र में ऐसे समाचार पढ़े होंगे । इससे हमें भारतीय संघराज्य के विभिन्न राज्यों की राजनीतिक पार्टियों की जानकारी मिलती है ।

- ये पार्टियाँ केवल राज्य तक ही सीमित क्यों हैं?
- राज्य के कुछ नेता हमें राष्ट्रीय स्तर पर दिखाई देते हैं तो कुछ नेता केवल राज्य तक प्रभावी ही रहते हैं, ऐसा क्यों ?

आपके इन्हीं प्रश्नों के आधार पर हम यहाँ प्रांतीय पार्टियों की संक्षेप में जानकारी प्राप्त करेंगे । भारत की चारों दिशाओं में फैले राज्यों में कार्यरत कुछ प्रातिनिधिक पार्टियों के बारे में हम यहाँ विचार करेंगे ।

भारत के विविध प्रांतों में विविध भाषाएँ बोलनेवाले और परंपराएँ-संस्कृति में भी विविधता लिये हुए लोग हैं । हम देखते हैं कि प्रत्येक प्रांत और उसकी अपनी स्वतंत्र भाषा है । प्रदेशों के भौगोलिक रूपों में भी विभिन्नता पाई जाती है । आपने महाराष्ट्र के विभिन्न भौगोलिक प्रदेशों का अध्ययन किया है । महाराष्ट्र जिस प्रकार मध्यप्रदेश अथवा कर्नाटक से भिन्न है, वैसे ही महाराष्ट्र में भी भौगोलिक, सांस्कृतिक विभिन्नता देखने को मिलती है ।

अपनी भाषा और अपने प्रदेश के बारे में जब आत्मीयता की भावना बढ़ जाती है, तब कुछ समय पश्चात अपनी भाषा और अपने प्रदेश के प्रति अस्मिता उत्पन्न होती है । परिणामस्वरूप 'प्रांतीयता' का निर्माण होता है । लोग क्रमशः अपने प्रांत के हित और विकास का विचार करने लगते हैं । अपनी भाषा, अपना साहित्य, परंपरा, सामाजिक सुधार का इतिहास, शैक्षिक और सांस्कृतिक आंदोलनों के बारे में गर्व की भावना अनुभव होने लगती है । फलतः भाषाई अस्मिता प्रबल होने लगती है । हमारे प्रदेश का विकास हो, यहाँ की संसाधन-सामग्री और रोजगार के अवसर पर हमारा अधिकार हो; इन्हीं भावनाओं से प्रांतीय अस्मिता का उदय होने लगता है ।

इस प्रकार की भाषाई, प्रांतीय, सांस्कृतिक और उनके प्रति उत्पन्न अस्मिताओं के इकट्ठे होने से प्रांतीयता की भावना प्रबल होने लगती है । इसी में से कई बार स्वतंत्र राजनीतिक पार्टियों का निर्माण होता है, तो कभी विभिन्न दबाव गुट और आंदोलनों का निर्माण होता है । इन सब का एक ही प्रमुख उद्देश्य होता है अर्थात अपने क्षेत्र के हित संबंधों का संरक्षण करना ।

प्रांतीय दल

विशेष प्रदेश के अलगपन का अभिमान रखनेवाले और उसकी प्रगति के लिए सत्ता की होड़ में उतरे राजनीतिक गुटों को 'प्रांतीय/प्रादेशिक पार्टी' कहा जाता है । उनका प्रभाव अपने-अपने क्षेत्र तक ही सीमित रहता है । फिर भी अपने प्रदेश में प्रभावशाली भूमिका निभाकर वे राष्ट्रीय राजनीति पर भी अपना प्रभाव छोड़ते हैं । प्रांतीय दल अपने प्रदेश

की समस्याओं को प्रधानता देते हैं । अपने प्रदेश का विकास साधने के लिए उन्हें अधिकारों के बदले स्वायत्तता महत्त्वपूर्ण लगती है । केंद्र सरकार को सहयोग देकर अपनी स्वायत्तता का क्षेत्र अबाधित बनाए रखने का काम ये प्रांतीय दल करते हैं ।

साथ ही; प्रांतीय समस्याओं को प्रांतीय स्तर पर सुलझाया जाए, सत्ता की बागडोर अपने ही प्रदेश के व्यक्ति के हाथ में रहे, प्रशासन और व्यवसाय में उस प्रांत के नागरिकों को प्रधानता मिले; इसके प्रति प्रांतीय दलों का आग्रह रहता है ।

भारतीय प्रांतीय दलों का बदलता स्वरूप : स्वातंत्र्योत्तर समय से भारत में प्रांतीय दलों का अस्तित्व रहा है परंतु उनके स्वरूप और भूमिकाओं में कुछ महत्त्वपूर्ण बदलाव दिखाई देते हैं ।

(१) प्रारंभिक समय में प्रांतीय अस्मिताओं को लेकर अलगाववादी आंदोलनों का निर्माण हुआ । स्वतंत्र खलिस्तान, द्रविड़स्तान जैसी माँगों का प्रमुख उद्देश्य संघराज्य से विभाजित होकर स्वतंत्र राष्ट्र का निर्माण करना था । इस संदर्भ में पंजाब, तमिलनाडु, जम्मू और कश्मीर के कुछ प्रांतीय दलों के उदाहरण दिए जा सकते हैं ।

(२) प्रांतीय दलों की भूमिका धीरे-धीरे बदलने लगी । स्वतंत्र राज्य की माँग के बजाय वे अधिकाधिक स्वायत्तता पाने के लिए प्रयत्न करने लगे । यह प्रांतीय दलों की विकासयात्रा का दूसरा चरण है । इस चरण की शुरूआत लगभग १९९० ई. के बाद हुई ।

(३) हमारे प्रदेश के विकास के लिए हमारे प्रदेश के नागरिकों को राज्य और केंद्र में सत्ता मिले, ऐसी भूमिका ये प्रांतीय दल अब लेने लगे हैं । उदा. शिवसेना, तेलुगु देसम ।

(४) पूर्वोत्तर भारत के प्रांतीय दलों के विकास का एक विशेष दृष्टिकोण दिखाई देता है । इन प्रदेशों के राजनीतिक दलों ने देश से विभाजित होने की माँग छोड़ दी और वे अधिकाधिक स्वायत्तता की माँग करते हुए दिखाई देते हैं । पूर्वोत्तर भारत के सभी प्रांतीय दल धीरे-धीरे प्रमुख राष्ट्रीय प्रवाह में आने लगे हैं ।

संक्षेप में कहना हो तो भारतीय प्रांतीय दलों की यात्रा अलगाववाद, स्वायत्तता और प्रमुख राष्ट्रीय प्रवाह में शामिल होना जैसे चरणों से हुई है । साथ ही राष्ट्रीय राजनीति में भी इनका प्रभाव बढ़ने लगा है । गठबंधन की सरकार यह इसी का एक परिणाम है ।

भारत में कई प्रांतीय दल हैं । सभी दलों की जानकारी यहाँ देना संभव नहीं है । इसलिए हम भारत के पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तरी क्षेत्र के कुछ प्रातिनिधिक दलों का परिचय प्राप्त करेंगे ।

कुछ प्रमुख क्षेत्रीय दल इस प्रकार हैं ।

(१)

शिवसेना

- महाराष्ट्र की प्रमुख राजनीतिक पार्टी । १९६६ ई. में स्थापना ।
- मराठी लोगों के अधिकारों की रक्षा, मराठी भाषा का संवर्धन, परप्रांतियों को विरोध ।
- १९९५ ई. में भारतीय जनता पार्टी से गठबंधन करके शिवसेना पहली बार महाराष्ट्र में सत्ता में आई । २०१४ ई. के चुनाव के बाद महाराष्ट्र में भाजपा के साथ सत्ता में सहभागी ।
- २०१९ में हुए चुनाव के बाद काँग्रेस पार्टी और राष्ट्रवादी काँग्रेस पार्टी के साथ महागठ बंधन कर 'महाविकास आघाडी' के रुप में सत्ता मे सहभागी ।

(२)

शिरोमणि अकाली दल

- पंजाब का महत्त्वपूर्ण प्रांतीय दल । १९२० ई. में स्थापना ।
- धार्मिक और प्रांतीय अस्मिता के संवर्धन को प्राथमिकता ।
- पंजाब में कई वर्षों तक सत्ता में ।

(३)

जम्मू और कश्मीर नैशनल कॉन्फरन्स

- कश्मीर का प्रमुख प्रांतीय दल । १९३२ ई. में स्थापना ।
- कश्मीरी जनता के हितसंबंधों की पूर्ति के लिए प्रयत्नशील । स्वायत्तता के संवर्धन के लिए प्रयत्नशील ।

(४)

असम गण परिषद

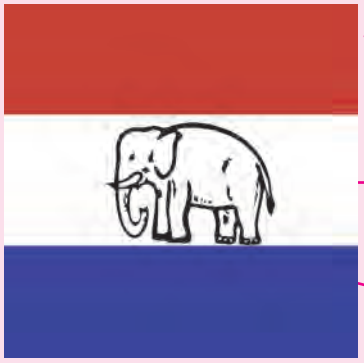

- १९८५ ई. में सरकार के साथ हुए समझौते से असम अनुबंध । १९८५ ई. में स्थापना ।
- शरणार्थियों के प्रश्नों को हल करना । असम की सांस्कृतिक, भाषाई और सामाजिक धरोहर की रक्षा करना । आर्थिक विकास हेतु प्रयत्नशील।
- पिछले कई वर्षों तक असम में सत्ताधारी पार्टी।

(५)

द्रविड़ मुन्नेत्र कळघम

१९२० ई. में ब्राह्मणेतर आंदोलन जस्टीस पार्टी का परिवर्तन 'द्रविड़ मुन्नेत्र कळघम' इस राजनीतिक दल में हुआ । १९४४ ई. से जस्टीस पार्टी 'द्रविड़ कळघम' के नाम से जानी जाने लगी । १९४९ ई. में इसमें से एक गुट अलग हुआ और उस गुट ने 'द्रविड़ मुन्नेत्र कळघम पार्टी' की स्थापना की । उसमें से भी एक गुट अलग हुआ और उसने १९७२ ई. में 'ऑल इंडिया अण्णा द्रविड़ मुन्नेत्र कळघम पार्टी' की स्थापना की ।

तमिल अस्मिता के संवर्धन का प्रयत्न । केंद्र की गठबंधन सरकार में भी कुछ समय तक सहभागी ।

सभी स्तरों के मतदाताओं का पार्टी को समर्थन । दीर्घकाल तक सत्ता में रहने के कारण कई उपाय योजनाओं को क्रियान्वित किया ।

भारत के प्रत्येक राज्य में कई प्रादेशिक दल कार्यरत हैं । उन्होंने अपने-अपने राज्य की राजनीति पर प्रभाव डाला है । उसके एक उदाहरण के रूप में महाराष्ट्र के प्रांतीय दलों का दो चुनावों के संदर्भ में कार्य निम्न तालिका में दिया है ।

महाराष्ट्र के प्रांतीय दल (विधानसभा में प्रतिनिधित्व)

पार्टी का नाम	प्राप्त स्थान	
	चुनाव वर्ष २००९	चुनाव वर्ष २०१४
शिवसेना	४४	६३
महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना	१३	१
शेतकरी कामगार पार्टी	४	३
भारिप बहुजन महासंघ	१	१
भारतीय रिपब्लिकन पार्टी	–	–
समाजवादी पार्टी	४	१
बहुजन विकास गठबंधन	२	३

पार्टी का नाम	प्राप्त स्थान	
	चुनाव वर्ष २००९	चुनाव वर्ष २०१४
राष्ट्रीय समाज पार्टी	१	१
ऑल इंडिया मजलिस-ए-इतेहदुल्ल मुस्लिमीन	*	२
जनसुराज्य शक्ति	२	–
लोकसंग्राम	१	–
स्वाभिमानी पार्टी	१	–

(* यह पार्टी २००९ ई. में अस्तित्व में नहीं थी ।)

बताइए तो ?

भारत के सभी राज्यों में प्रांतीय दल हैं । उन सभी की यहाँ चर्चा करना असंभव है । भारत के मानचित्र के आधार पर अन्य कुछ प्रांतीय दलों की जानकारी प्राप्त कीजिए ।

प्रस्तुत पाठ में हमने भारत के राष्ट्रीय और प्रांतीय स्तरों की राजनीतिक पार्टियों की समीक्षा की है । अगले प्रकरण में हम राजनीतिक आंदोलनों का हमारे जीवन में जो महत्त्व रहा है, उसकी जानकारी समझेंगे ।

स्वाध्याय

१. निम्न विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर कथन पूर्ण कीजिए ।

(१) राजनीतिक सत्ता को प्राप्त करने के लिए जब लोग इकट्ठे आकर चुनाव प्रक्रिया में सहभागी होते हैं, तब उन संगठनों को ..... कहा जाता है ।
(अ) सरकार (ब) समाज
(क) राजनीतिक दल (ड) सामाजिक संस्था

(२) नैशनल कॉन्फरन्स पार्टी ..... राज्य में है ।
(अ) ओडिशा (ब) असम
(क) बिहार (ड) जम्मू और कश्मीर

(३) जस्टीस पार्टी इस ब्राह्मणेतर आंदोलन का रूपांतरण ..... इस राजनीतिक दल में हुआ ।
(अ) असम गण परिषद
(ब) शिवसेना
(क) द्रविड़ मुन्नेत्र कळघम
(ड) जम्मू और कश्मीर नैशनल कॉन्फरन्स

२. निम्न कथन सत्य है या असत्य; सकारण स्पष्ट कीजिए ।

(१) राजनीतिक दल सरकार और जनता के बीच एक कड़ी का काम करता है ।
(२) राजनीतिक दल सामाजिक संगठन ही होता है ।
(३) गठबंधन सरकार के कारण अस्थिरता उत्पन्न होती है ।
(४) 'शिरोमणि अकाली दल' राष्ट्रीय पार्टी है ।

३. निम्न संकल्पनाएँ स्पष्ट कीजिए ।

(१) प्रादेशिकता (२) राष्ट्रीय दल

४. निम्न प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर लिखिए ।

(१) राजनीतिक दलों की प्रमुख विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए ।
(२) भारत में दल पद्धति के स्वरूप में क्या परिवर्तन हुआ है ?

उपक्रम

(१) आपके माता-पिता का नाम जिस निर्वाचन क्षेत्र में आता है, उस निर्वाचन क्षेत्र को महाराष्ट्र के मानचित्र में दिखाइए ।

(२) भारत के मानचित्र में प्रमुख प्रांतीय राजनीतिक दलों का कहाँ-कहाँ प्रभाव है; वे स्थान दर्शाइए ।

3JRF3U